गांधी जयंती के पावन पर्व पर साबरमती आश्रम प्रिजेर्वेशन एण्ड मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा आयोजित "सर्वधर्म प्रार्थना सभा" में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन । (दिनांक : २ अक्टुबर, २०१८)

- आज भारत के दो महान सपूतों की जन्म जयंति है – पूज्य महात्मा गांधीजी की और श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की । गांधीजी का जन्म १९वीं शताब्दी में हुआ था और वे हमें २०वीं शताब्दी में छोड़कर चले गये। आज हम २१वीं शताब्दी में है।
- १९वीं शताब्दी में भारत माता के ऐसे कई सपूत हुये जिन्होंने भारत को खोजने का प्रयास किया । भारत क्या हैं, भारत कहाँ है, भारत किन सिद्धांतों में है, भारत किन जीवन मूल्यों में है,इन सभी के बारे में उन्होंने अपने मंतव्य दिये । महात्मा गांधीजी ने भी अपने तरीके से भारत को खोजने का प्रयत्न किया । उन्होंने सन् १९०९ में "हिन्द स्वराज" नाम की एक पुस्तक की रचना की । पश्चिम के मुडीवाद में भारत जो खो रहा था उसी भारत को पश्चिम के मुडीवाद से बाहर निकालकर अपनी जड़ो से जुड़ना चाहिये ऐसा कहकर भारतीयता की जड़ों को उन्होंने खोजकर बड़े आग्रहपूर्वक इस पुस्तक में प्रस्तुत किया।
- आगे चलकर महात्मा गांधीजी ने जो "हिन्द स्वराज" में कल्पनायें की थी उन कल्पनाओं को आकार दिया ठोस स्वरूप दिया और "हिन्द स्वराज" में कही हुई बातों को आधार बनाकर आज़ादी के आंदोलन को वो आगे ले गये। उनकी बहुत बड़ी तीन देन है,

जिनके बारे मे मैं आपसे बात करना चाहूँगा।

- महात्मा गांधीजी एक ऐसी सभ्यता को चाहते थे जो नैतिक मूल्यों पर आधारित थी । केवल भौतिक और आर्थिक प्रगति पर आधारित समाज व्यवस्था उनका आदर्श नहीं था । वे धर्म और नीति पर आधारित समाज व्यवस्था चाहते थे । उन्होंने इसका आग्रहपूर्वक वर्णन भी किया है अपनी रचनाओं और अपने लेखों में।
- गांधीजी की दूसरी बड़ी देन यह थी कि उन्हें लोकशक्ति में विश्वास था । साधारणरूप में जन्मे हुये आम व्यक्ति में एकसुषुप्त शक्ति होती है जिसे एक बार जगाने की जरूरत है। गांधीजी ने इस सोये हुये भारत में लोक शक्ति को जगाया और उसी लोक शक्ति को जगाकर उसके सहारे उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य का अंत किया जिसके बारे में कहा जाता था कि उसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता।
- पूज्य महात्मा गांधीजी की तीसरी देन यह थी कि वे हमेशा रचनात्मक कार्यो पर बल देते थे । रचनात्मक कार्य के जरिये से वे लोकशक्ति को खड़ी करना चाहते थे । रचनात्मक कार्य विविध प्रकार के हो सकते है। अभी हमारे उपमुख्यमंत्री जी ने स्वच्छता तथा व्यसन मुक्ति का जिक्र किया । अभी श्रीमती रानीबहन ने गढ़ चिरोली में शराब पीने के खिलाफ जो जन-जागरण हुआ था इसका जिक्र किया। इस प्रकार पूज्य गांधीजी के लिये देश की स्वतंत्रता जितनी महत्वपूर्ण थी उतने ही महत्वपूर्ण उनके लिये वे रचनात्मक कार्य थेजिनकावे

बार-बार आग्रह करते थे । इसलिए नैतिक मूल्य, लोकशक्ति का जागरण तथा रचनात्मक कार्य का आग्रह - ये तीन गांधीजी के महत्वपूर्ण पहलू है जिनसे उन्होंने वैसी शक्ति अर्जित की जिससे सोया हुआ भारत जागकर खड़ा हुआ।

- पूज्य गांधीजी आज से ७० वर्ष पहले हमें छोड़कर चले गये । लेकिन वह भावी भारत की तस्वीर हमारे सामने छोड गये है । "मेरे सपनों का भारत" (India of My Dreams) में उन्होंने भावी भारत कैसा होगा इसका एक चित्र प्रस्तुत किया है । गांधीजी की हमसे यह अपेक्षा थी कि हम भावी भारत को उस रूप में गढ़ें जिसका निरूपण उन्होंने इस पुस्तक में किया है। आज गांधीजी हमारे बीच में नहीं है। लेकिन उनका दिखाया गया मार्ग हमारे सामने है। हमारे लिये करणीय क्या है, यह बात वास्तव में पूज्य गांधीजी की प्रासंगिकता है । बुद्धिजीवी वर्ग में कभी-कभी यह चर्चा चलती है कि गांधीजी आज प्रासंगिक रहे है या नहीं। यदि आज़ादी के बाद गांधीजी के सपनों का भारत नहीं बना है तो वैसा भारत बनाने की दिशा में इस प्रक्रिया को हमें आगे बढ़ाना चाहिये यह गांधीजी की प्रासंगिकता का एक पहलू है । गांधीजी की दूसरी प्रासंगिकता यह है कि वे जिन सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहते थे वे सामाजिक कुरीतियां दूर हुई है या नहीं और अगर कुरीतियां दूर नहीं हुई है तो भी आज गांधीजी प्रासंगिक है । गांधीजी चाहते थे कि हम सामाजिक वैमनस्य से दूर हों और एक सामाजिक सौहार्द हमारे बीच में पैदा हो । अगर

आज हम सामाजिक वैमनस्य देखते है तो गांधीजी आज भी सार्थक है । हमें यह देखना है कि इस सामाजिक वैमनस्य को हम कैसे दूर करें और उसे सामाजिक सौहार्द की तरफ ले जाये।

- आज हम दुनिया में आतंकवाद और हिंसा का प्रसार होता हुआ देख रहे है । पूज्य गांधीजी एक इस प्रकार की समाज रचना चाहते थे जो अहिंसा, प्रेम और सद्भावना पर आधारित है । इसीलिए पूज्य गांधीजी आज भी प्रासंगिक है।
- मुझे लगता है कि पूज्य गांधीजी की प्रासंगिकता और अप्रासंगिकता पर खाली बौद्धिक चर्चाएं करते रहना, या विवाद तथा तर्क-वितर्क करने रहना इसकी आवश्यकता नहीं है । हम यह मानकर चले कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय पर पूज्य गांधीजी जितने प्रासंगिक थे उससे कम प्रासंगिक वे आज नहीं है। हमें उनके दिखाये हुये मार्ग पर चलकर उन सपनों को पूरा करना चाहिये जो सपने पूज्य गांधीजी ने देखे थे। यही गांधीजी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
- हमारे देश के प्रधानमंत्री जी पूज्य गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। हम सभी लोगों का भी यह कर्तव्य बनता है कि पूज्य गांधीजी की १५०वीं जन्म जयंति के वर्ष में हम सभी पूज्य गांधीजी के अधूरे कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास करें। धन्यवाद।